बढ़ी चलो लेकर साक्षरता की मशाल

वीणा शिवपुरी

हमारे देश के महिला आंदोलन के सामने बहुत से मुद्दे हैं। घर में बेटी का नीचा दर्जा, औरतों के साथ घरेलू मारपीट, बढ़ती मंहगाई, कम मज़दूरी, अधिकार हीनता और न जाने क्या-क्या। इन सब समस्याओं को एक जगह गिनाना भी संभव नहीं। गांव-गांव में औरतों के समूह, संस्थाएं इन समस्याओं से जूझ रही हैं। फिर भी इनका अंत कहीं नज़र नहीं आता। सभी कमर कस कर इस लड़ाई में जुटी हैं।

आशा की किरण

इस पूरी तस्वीर में अगर कहीं आशा की किरण नज़र आती है तो वह है साक्षरता अभियान। पिछले कुछ सालों में देश के कुछ हिस्सों में चले साक्षरता कार्यक्रमों ने जो असर दिखलाया है वह हम सबको जोश से भर देता है।

आज भी भारत में स्त्री साक्षरता दर बहुत नीची है। बहुत कुछ करना बाकी है लेकिन ख़ास बात यह है कि कुछ जगहों पर साक्षरता ने औरतों को ताक़तवर बनाया है। इन उदाहरणों ने रास्ता दिखलाने वाली मशाल का काम किया है। यह भी साबित कर दिया है कि साक्षरता का मतलब केवल लिखना पढ़ना सीखना नहीं है। साक्षरता के ज़रिए सोच के दरवाजे खुलते हैं। रास्ते की अड़चनों से निपटने की ताक़त आती है।

कुछ दमदार उदाहरण

आंध्र प्रदेश में प्रौढ़ शिक्षा की किताब 'सीतम्मा की कहानी' ने औरतों को जिस तरह जगाया वह अब सबको मालूम है। वहां की औरतों ने आगे बढ़ कर देशी शराब 'अरक' के खिलाफ़ अभियान चलाया। शराब बनाने और बेचने के धंधे में बड़े-बड़े लोग थे। सरकार को भी उससे आमदनी होती थी। गांव की ये औरतें इतने ताक़तवर लोगों से टक्कर लेने में नहीं डरी। अंत में सरकार को झुकना पड़ा।

यह सही है कि सिर्फ़ किताब पढ़ कर ही सब चेतन नहीं हो जाते। सही हालात भी होने चाहिए। लेकिन साक्षरता और किताबों से चेतना का बीज ज़रूर पड़ता है। वह बीज फले-फूले यह हम पर निर्भर करता है।

आंध्र प्रदेश में औरतों की सफलता देख कर अब दूसरे प्रदेशों की औरतें भी शराब के खिलाफ़ लड़ाई छेड़ रही हैं। शराबखोरी का सबसे बड़ा नुकसान तो औरतें ही भोगती हैं। मर्द शराब में पैसा उड़ा देते हैं जबकि परिवार भूखा मरता है। शराब पीकर औरतों के साथ मार पिटाई होती है। यहां तक कि मेहनत से कमाई औरत की आमदनी भी मर्द छीन लेते हैं। इस सबको औरतें चुपचाप क्यों सहें?

सरकार ने देश के तीन राज्यों उत्तर प्रदेश, गुजरात और कर्नाटक में महिला समाख्या कार्यक्रम चालू किया है। इस कार्यक्रम के तहत जिस तरह से उन इलाक़ों की औरतों ने ताक़त पाई है वह

देखने लायक है।

कहीं औरतें पानी मुहैया कराने के लिए लड़ रही हैं। कहीं वे हैंडपंप मिस्त्री का काम सीख कर मुस्तैदी से गांव-गांव घूम रहीं हैं। अपनी ज़मीनों पर अपना कानूनी हक़ मांग रही हैं। अपनी साक्षरता की किताबें खुद रच रही हैं। यानि अब औरतें खुद तय करेंगी कि वे क्या पढ़ना चाहती हैं और क्या सीखना चाहती हैं।

इस साल मार्च से अप्रैल तक एक महीने के लिए पूरे देश में 'समता' के झंडे तले औरतों की शिक्षा, समानता और शांति की लहर चली। यह लहर अपने पीछे इतने बीज सींच आई है कि आने वाले समय में वहां भरपूर फ़सल लहलहाएगी। जागृति और चेतना की फ़सल।

साक्षरता से ताक़त

इन सब उदाहरणों से बड़ी हिम्मत बंधती है। लिखना पढ़ना सीखने से रोज़मर्रा की ज़िंदगी में फ़ायदा ज़रूर है लेकिन सिर्फ़ इतना ही काफ़ी नहीं है। असली फ़ायदा तो जब है कि इसके ज़रिए औरतें अपनी समस्याओं से निपटना सीखें। चाहे वह समस्या पानी की हो या शराबख़ोरी की।

साक्षरता तो एक पहिया है जो ज़िंदगी की गाड़ी को अच्छी तरह आगे ले जाता है। पहिया घूमता है तो गाड़ी आगे बढ़ती है। पर ध्यान रहे, पहिए और गाड़ी के बीच की कीली मज़बूत रहे। वरना पहिया घूमता रहेगा और गाड़ी आगे नहीं बढ़ेगी। ऐसी साक्षरता का कोई फ़ायदा नहीं जो व्यक्ति को अपने अधिकारों के प्रति सचेत न करे। □